कंठ सारस *(मिक्टेरिया लिउकोसेफाला)*

आईयूसीएन रेड लिस्ट (IUCN Red List)-नियर थ्रटेन्ड (संकट निकट)। भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम, १९७२ -अनुसूची ४। साईटिस (CITES)- सूचीबद्व नहीं है।

यह गंगा के मध्य और निचले हिस्सों में पाये जाने वाला ९३ से १०० सेमी लंबाई का पक्षी है। इसका शरीर सूफेद, पंख का किनारा काला, पूंछ गुलाबी, सिर लाल और पीला-नारंगी रंग की लम्बी चोंच होती है। यह दिन में छोटी मछली, मेंढ़क और कभी-कभी सांपो का भी शिकार करता है। ये अगस्त से अक्टूबर तक पेड़ के ऊपर डाली से बने घोंसले में एक बार में ३ से ४ अंडे देता है। इनके निवास स्थान का विनाश, प्रदूषण, अंडे और बच्चों को नुकसान, अवैध शिकार और वनस्थलियों की कटाई इनके संकट का मुख्य कारण है।

बड़ा करवानक *(इसाकस रेकरविरोस्टस)*

आईयूसीएन रेड लिस्ट (IUCN Red List) - लीस्ट कन्सर्न (कम चिंता का विषय)। भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम, १९७२ - सूची ४। साईटिस (CITES) - परिशिष्ट २ यह गंगा नदी के ऊपरी, मध्य और निचले भागों में पाया जाता है। ये हरे-भूरे रंग का, मध्य पृष्टीय, पीली रेखा वाला १३४ मिमी का मेंढक है। यह धान के खेतों में विशेष रुप से मीठे पानी की झीलों में पाया जाता है। यह अधिकतर एकान्त में रहते हैं। छोटे स्तनपायी जीव और पक्षी इनका भोजन होते हैं। ये मानसून के दौरान प्रजनन करते हैं और बड़ी संख्या में अंडे देते हैं। परन्तु टैडपोल, छोटे बच्चे और वयस्क सदस्यों के उच्च मुत्युदर इनके आबादी कम होने का कारण है। कीटनाशकों, रासायनिक कृषि खाद और जल प्रदूषण इनके लिए मुख्य खतरे हैं।

जरडन बुल-मेढ़क *(हॉप्लॉबेक्ट्रारकस क्रासस)*

आईयूसीएन रेड लिस्ट (IUCN Red List) - लीस्ट कन्सर्न (कम चिंता का विषय)। भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम,

१९७२ - सूचीबद्ध नही है। साईटिस (CITES) - सूचीबद्ध नही है। यह गंगा नदी के ऊपरी, मध्य और निचले भागों में पाये जाते हैं। ये १२१ मिमी लंबे गहरे रंग के धब्बे और अनियमित ग्रंथियों, सिवटों वाले मेंढ़क हैं। ये घास के मैदानों, खुले मैदानों और शुष्क क्षेत्रों, कृषि क्षेत्रों और मानव के आसपास पाये जाते हैं। बड़ी नदियां इनके प्रमुख प्रजनन स्थल हैं। वासस्थन का विनाश इनके अस्तित्व के लिए मुख्य खतरे हैं।

दुधवा पेड़-मैंढक *(चिरोमनटिस दुधवेनसीस)*

आईयूसीएन रेड लिस्ट (IUCN Red List) - डेटा डेफिसियेन्ट (आंकड़ो की कमी)। भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम, १९७२ - सूचीबद्ध नही है। साईटिस (CITES) - सूचीबद्ध नही है। इस प्रजाति के मेंढ़क वर्तमान में भारत के उत्तर प्रदेश राज्य के 'दुधवा नेशनल पार्क' में समुद्र-तल से १०० मीटर ऊपर के क्षेत्र में पाये जाते हैं। यह भूरा-पीले रंग का मेंढ़क होता है। यह प्रजाति अधिकतर समय पेड़ पर बिताती है, और झाड़ी वाले वन, घास के मैदान और ग्रामीण बस्तियों में रहते हैं। इनका प्रजनन स्थायी तालाबों एवं जलाशयों में होता है। इनके खतरों के बारे में पूर्ण रुप से जानकारी नहीं है।

GANGA AQUALIFE CONSERVATION MONITORING CENRE

भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India
भारतीय वन्जीव संस्थान
चन्द्रबनी, देहरादून – 248 001 उत्तराखण्ड
www.wii.gov.in
http://www/wii.gov.in/nmcg/priority-species

नमामि गंगे

भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India

VIBRANT GANGA

जीवन दायिनी गंगा

जलवायु परिवर्तन की चपैट में गंगा के वाशिंदे:

गंगा की उडान संकटग्रस्त पंक्षी

राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन
NATIONAL MISSION FOR CLEAN GANGA

जैवविविधता संरक्षण और गंगा जीर्णोद्धार

गंगा हमारी राष्ट्रीय नदी है। इससे हमारी गहरी धार्मिक और सांस्कृतिक विश्वास और भारतीय सभ्यता की जीवन रेखा जुडी हुई है। दुनियाँ में गंगा नदी सबसे बड़ी जीवित नदी प्रणालियो में से एक है। हालाकि नदी की मुख्य धारा भारत के 5 राज्यों में से बहती है, लेकिन पूरे 11 राज्यो के लिए पानी उपलब्ध कराती है। भारत में 5 करोड़ से अधिक जनसंख्या गंगा पर निर्भर है। इसके अलावा गंगा नदी कई प्रजातियों के कछुए, मगरमच्छ, घड़ियाल और राष्ट्रीय जलीय जीव डॉल्फिन सहित बहुत सारी पक्षियों का निवास स्थान है।

विश्व में अधिक जैव विविध देश होने के नाते भारत 1301 प्रजातियो के पक्षियों का निवास स्थल है। उसमें से गंगा बेसिन 177 आर्द्रभूमि और स्थलीय प्रजातियों के पक्षियो का समर्थन करती है। गंगा में विभिन्न लुप्तप्रायः पक्षियों की प्रजाति पाई जाती हैं और ये यहाँ प्रजनन भी करती हैं।

ये जीव समुदाय नदी के स्वच्छता को दर्शाता है। लेकिन मनुष्यो द्वारा हस्तक्षेप से निरन्तर नदी के जलस्तर में परिवर्तन, जलवायु परिवर्तन और वासस्थान का विनास के कारण ज्यादातर प्रजातियाँ विलुप्त होने की कगार पर है। सांस्कृतिक मान्यताओं के अनुसार पक्षी देवी लक्ष्मी और भगवान विष्णु के वाहन, पूर्वजों की आत्मा और प्रेम का प्रतीक स्वरूप माने जाते हैं। ये पौराणिक कथाओं में पवित्र माने जाते रहें है। गंगा के बेसिन में पाये जाने वाले सारस प्रेम और लम्बी आयु का प्रतीक है। महर्षि बाल्मीकि ने कुंचा (सारस) को मारने वाले शिकारी को दुनिया की सबसे पहले लिखी जाने वाली दो पंक्तियों में शापित किया था, इन्हीं पंक्तियों से बाल्मीकि को रामायण लिखने की प्रेरणा मिली।

राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन– भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून ''जैव विविधता संरक्षण और गंगा जीर्णोद्धार'' परियोजना विज्ञान आधारित जलीय जीवों का बहाली योजना है। इस परियोजना के अन्तर्गत गंगा के पक्षीयों के संरक्षण के द्वारा विज्ञान आधारित नदी संरक्षण किया जा रहा है।

काली तोहरी
(स्टर्ना ऑक्टिकॉडा)

आईयूसीएन रेड लिस्ट (IUCN Red List)- एन्डेन्जर्ड (संकटग्रस्त)। भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम, १९७२- अनुसूची ४। साईटिस (CITES)- सूचीबद्व नही है।

ये ३३ सेमी की चिड़िया, गंगा नदी के मध्य और निचले हिस्सों मे पायी जाती है। वयस्क चिड़िंया के नारंगी चोंच, सिर का उपरी व पिछला हिस्सा काला, पेट भूरा और पूंछ का निचला हिस्सा काला होता है। यह पानी के सतह में उड़ती है, तथा छलांग लगा कर पानी के कीड़े और मछली खाती है। यह जमीन से भी कीड़े चुन-चुन कर खाती है। यह फरवरी से अप्रैल में प्रजनन करती है और एक बार में २ से ३ अण्डे देती है। यह नदियो के रेतीले द्वीपो और तटों में एक साथ अपना घोंसला बनाती है। इनके प्रजनन स्थल का विनाश, नदी तटीय ह्रषि, जल प्रदूषण, स्थानीय गांव के कुत्ते बिल्लियों के द्वारा अण्डे खाना और घोंसले को नुकसान पहुंचाना एवं अचानक छोड़ा गया बांध से पानी इनके संकट के मुख्य कारण हैं।

भारतीय सारस
(अन्तिगोन अन्तिगोन)

आईयूसीएन रेड लिस्ट (IUCN Red List)- वल्नरेबल (संवेदनशील)। भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम, १९७२- अनुसूची ४। साईटिस (CITES)- परिशिष्ट २।

यह गंगा नदी के मध्य और निचले हिस्सों में पाया जाने वाला भारत का सबसे बड़ा पक्षी है। यह १५६ सेमी लम्बा होता है, इसका सिर और गर्दन का ऊपरी हिस्सा लाल, शरीर भूरा, चोंच हरी और पैर लाल रंग के होते हैं। यह सर्वहारी होते हैं, जो जलीय पौधे, छोटे जलीय जीव और कीड़े खाते हैं। यह जून से सितम्बर तक प्रजनन करते है तथा एक बार में २ से ३ अंडे देते है। यह अपना घोंसला ह्रषि भूमि और घास के मैदानों में बनाते है। खेतीबाड़ी के दौरान आर्द्र भूमि के जल निकास, ह्रषि में उपयोग करने वाले कीटनाशकों एवं अचानक छोड़ा गया बांध का पानी इनके संकट का मुख्य कारण है।

पंछिरा पक्षी
(रिनचॉप्स अलबिकालिस)

आईयूसीएन रेड लिस्ट (IUCN Red List)- वल्नरेबल (संवेदनशील)। भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम, १९७२- सूचीबद्व नही है। साईटिस (CITES) - सूचीबद्व नही है।

यह गंगा के मध्य और निचले हिस्सों में पायी जाने वाली ४० सेमी के आकार की चिड़िया है। इसके गहरी नारंगी चोंच का निचला भाग ऊपरी भाग से लम्बा होता है। इस पक्षी का शरीर काला-सफेद और पैर लाल रंग का होता है। यह निचले चोंच को पानी के सतह से लगाकर उड़ते हुए मछली पकड़ती है। इसके अलावा ये जलीय कीटों को भी खाती है। यह चिड़िया फरवरी से मई में नदी के रेतीले द्वीपों में सामूहिक तरीके से घोंसला बनाती है तथा एक बार में ३ से ४ अंडे देती हैं। झीलों, नदियों में जल स्तर परिवर्तन, इनका निवास स्थलो का विनाश और अंडे व घोंसलो को कुत्ते व बिल्लियो के द्वारा नुकसान पहुंचाना इनके संकट का मुख्य कारण है।

दरियाई तोहरी
(स्टर्ना औरैंशिया)

आईयूसीएन रेड लिस्ट (IUCN Red List)-नियर थ्रटेन्ड (संकट निकट)। भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम, १९७२ -अनुसूची ४। साईटिस (CITES)- सूचीबद्व नहीं है।

यह गंगा के मध्य और निचले हिस्सों में पाये जाने वाली ३८ से ४६ सेमी लंबी चिड़िया है। इसका शरीर भूरे-सफेद रंग का होता है। इसकी चोंच पीली, द्विभाजित पूंछ एवं लाल पैर होते हैं। यह ज्यादातर मछली और छोटे जलीय जीवो का शिकार करते हैं। यह चिड़िया मार्च से जून में नदी के रेतीले द्वीपों में सामूहिक तरीके से घोंसला बनाती है तथा एक बार में २ से ३ अण्ड़े देती हैं। झीलों, नदियों के जल स्तर में परिवर्तन, इनके निवास स्थलों का विनाश और अण्ड़े व घोंसलो को कुत्ते व बिल्लियों के द्वारा नुकसान पहुंचाना इनके संकट का मुख्य कारण है।